समाधि स्थल पर किया श्रद्धा से नमन

महाप्रज्ञ की याद में छलके विदेशियों के आंसू

सरदारशहर 1 नवज़्बर, 2010

आचार्य महाप्रज्ञ की ज़्याति का इसी बात से अन्दाज लगा सकते हैं कि सात समन्दर पार बसने वाले विदेशी भी उनकी याद में अपने आंसूओं को रोक नहीं पाये। पीछले तीन दिनों से आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में चल रही प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षण कार्यशाला में रूस से आये संभागियों ने जब आचार्य महाप्रज्ञ के समाधि स्थल पर पहुंचकर श्रद्धा से सिर झुकाया तो आंखों से आंसू छलक पड़े। प्रेक्षा इन्टरनेशनल द्वारा प्रतिवर्ष लगने वाले अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविरों में भाग लेने वाले रसियन संभागियों ने आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व उनके द्वारा प्रदत मानव उत्थान के अवदानों को और उनके सान्निध्य में बिताये अनमाले क्षणों को याद कर समाधी को नमन किया। उल्लेखनीय है कि रूस, कूर्गन, कजाकिस्तान, जर्मनी, जापान, अमेरिका, लंदन आदि देशों में प्रेक्षाध्यान के 100 से अधिक सेन्टर संचालित हो रहे हैं। जिनमें उन्हीं देशों के प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण देते हैं। विदेशी श्रद्धालुओं के लिए 11 नवज़्बर से 18 नवज़्बर तक सरदारशहर में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में विशेष शिविर का आयोजन किया जायेगा।

पुनः तेरापंथ भवन पधारे

धन का अभाव दरिद्रता नहीं : आचार्य महाश्रमण

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि धन का अभाव दरिद्रता नहीं है। धन के होते हुए दान न देना दरिद्रता का लक्षण है। कंजुसी मानवीय दुर्बलताएं और अति आसक्ति का भाव है, जो सुपात्र को दान देता है वह आत्म शुद्धि का प्रयोग है।

उक्त विचार उन्होंने तेरापंथ भवन में धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि साधु को दान देने पर धर्म का लाभ होता है, गरीब को दान देने पर दयालु कहलाता है, मित्र को दान देने से प्रेम बढ़ता है, शत्रु को दान देने पर वैर भाव दूर होते हैं। दान कभी खाली नहीं जाता है। उन्होंने कहा कि अभयदान सर्वोत्कृष्ट दान है। किसी प्राणी को न मारने का संकल्प लेना अभयदान है।

चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री रतन दूगड़ ने बताया कि आचार्य महाश्रमण गांधी विद्या मन्दिर के तीन दिनों के प्रवास के पश्चात् आज प्रातः 8.30 बजे तेरापंथ भवन में अपनी धवल वाहिनी के साथ पधारे।

रतन दूगड़ ने आगे बताया कि आचार्य महाश्रमण 4 से 6 नवज़्बर को श्रीसमवसरण (साधों के ठिकाने) एवं गोठीजी की हवेली में विराजेंगे।